# वैदिक काल (VADIC AGE)

वैदिक सभ्यता - 1500 BC to 600 BC

[1] लगभग 5000 वर्ष पूर्व अथवा उससे भी कुछ पहले भूमध्य सागरीय वर्ग की भाँति एक नई जाति पश्चिम से भारत में आयी और उसने बालुचिस्तान सहित भारत के अधिकांश प्रदेश पर कब्जा कर लिया वे लोग अपनी समान भाषा के नाम पर पिछे चलकर द्रविड़ कहलाये उन्होंने एक उच्च कोटि की सभ्यता का विकास किया और अनेक महत्वपूर्ण नगर बसाये

2. 2000 BC के आस-पास अथवा उसके कुछ शताब्दियों के पश्चात आर्य भाषा बोलने वाली एक अन्य गोरी जाति, जो सामान्यतः किन्तु गलत रूप में आर्य अथवा भारतीय आर्य कही जाती है, धीरे-धीरे उत्तर पश्चिम से हिन्दु कुश पर्वत को पार करती हुई अफगानिस्तान के रास्ते भारत मे प्रविष्ट हुई।

Note (i) आर्य शब्द भाषा समूह ~~समूह~~ को इंगित करता है।
(ii) आर्य का शाब्दिक अर्थ है - कुलीन, श्रेष्ठ, उदात्त, अभिजात्य, उत्कृष्ट एवं स्वतंत्र होता है।

3. द्रविडो ने स्वभाविक रूप में नवआगन्तुको का अपनी पुरी शक्ति से प्रतिरोध किया और दिर्घ काल तक दोनो जातियो में भिषण संघर्ष होता रहा यह युध्द न केवल दो जातियो का बल्कि दो संसकृतियों का भी था। ऋगवेद के अनेक ऋचाओं से इस युध्द के भिषणता का पता चलता है।

4. भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत की सुखद भुमी पर ~~पीढ़ियों~~ पिढ़ियों से जन्मे और पलने वाले लोग उत्तर पश्चिम क्षेत्रों से समय-समय पर इस देश में आने वाले नये कठोर पर्वतीय लोगों के सम्मुख नही ठहर सके, द्रविड़ भी इसके अपवाद नही थे। बडी वीरता से लड़े और अनेक युध्द क्षेत्रों में सैकड़ो हजारों को लाद में कर मरे लेकिन अन्ततगत्वा उन्हे आक्रामको के सम्मुख झुकने टेक देने पड़े आर्यो ने उनके नगर एवं महल को ध्वस्त कर दिया, मकानो को मलबा डाला और कितनों को अपना दास बना डाला।

5. बहुत से द्रविडो ने दक्षिण जाकर शरण ली और आज उनके वंशज तमील, तेलगु, मलयालम और कन्नड नामक भाषाएं बोलते है।

कुछ अन्य जातियां उत्तर दक्षिण और पुरब की ओर चली गयी और पर्वतों तथा जंगलों के अपना कठोर जीवन व्यतीत करने लगी उनके वंशज कोल, भील, गोण्ड और हिमालय की अन्य अनेक जातियां आर्य भी उन पहाड़ीयों पर है जहां चार हजार वर्ष पुर्व आर्यों ने उनके पुर्वजों को धकेल दिया था।

6. भारत भूमी पर इस प्रकार पैर जमाने वाले आर्यों का अपना पुर्ववर्ती इतिहास था वे मानव जाति के अति प्राचीन समुह के थे और बहुत दिनों तक वे उन लोगों के साथ रहते थे जो युनान रोम जर्मनी इंगलैण्ड, हालैण्ड, स्पेन, फ्रांस, रुस, बुलगेरिया इत्यादि लोगों के पुर्वज थे

7. संस्कृत के शब्द पितृ और मातृ Latin के "पेटर" और "मेटर" ग्रीक के "पेटेर" और "मेटेर", अंग्रेजी का "Father" और "Mother" और जर्मनी का ", water वेटर" और "Muter मुटेर" निश्चय रूप से एक हो है। ये मानव की सबसे आदिम भावनाओं अर्थात माता और पिता के व्यक्त करते है। भाषाओं की समानता के कारण अनेक विद्वानों ने यह मान लिया है कि जिन आर्यों ने भारत को जीता, वे निश्चय ही उस जाति के थे जिनके वंशज आज उपर्युक्त भाषाएं बोलते है और प्राचीन एवं अरवाचीन युगों में अमीट ख्याती अर्जित की।

लेकिन यह निष्कर्ष तर्क संगत जान नही पड़ता भाषा की एकता से एक की एकता सिद्ध होती है ऐसी बात नही है निष्कर्ष केवल यही हो सकता है कि इन देशों वासियों के पुर्वज किसी प्रदेश के बहुत दिनों तक निकट सम्पर्क मे रहे थे।

Scanned with CamScanner

समान्य मत है कि वे लोग मध्य एशिया अथवा दक्षिणी रूस में कहीं रहते थे कुछ लोग उन्हे ~~X~~ भी उत्तर के ध्रुव प्रदेश का निवासी मानते है तथा कुछ अन्य लोग आस्ट्रिया, हंगरी इत्यादि मानते है।

8. इन समूहों में से एक और अधिक औरो से अलग हो कर भारत की ओर चला यथा समय उनमेंसे कुछ ईरान कहे जाने वाले प्रदेश मे बस गये और उन्होने उस संसकृति का जन्म दिया जिसके स्पष्ट चिन्ह और उनके वंशज ईरान मे पाये जाते है।

शेष जातियों ने हिन्दु कुश पार किया और द्रविड़ो को निकाल कर पंजाब पर अधिकार कर लिया जिसका वर्णन उपर किया जा चुका है।

9. यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि कुछ भारतीय विद्वान यह नही मानते की आर्य बाहर से आये उनका कहना है कि वे भारत के मूल निवासी थे जिनके कुछ वर्गो ने भारत से निकलकर धीर-धीरे एशिया और यूरोप के कुछ देशो मे प्रवेश किया आर्य भाषा बोलने वाले युनानी, रोमक और अन्य लोग या तो उन्ही लोगो के अथवा उन लोगो के वंशज है जिनपर उन्होने या तो विजय प्राप्त कर अथवा अन्य शांतिपूर्ण उपायों से अपनी भाषा लाद दी इस विचार को मानने मे अनेक कठिनाईयां है इसे अनेक भारतीय विद्वान भी स्वीकार नही करते भारत से बाहर इसे कोई मानता ही नही।